प्रार्थना करने पर उन्होंने साधारण बालक का सा रूप धारण कर लिया। यहाँ भी श्रीकृष्ण जानते हैं कि अर्जुन की रुचि वास्तव में उसके चतुर्भुजरूप को देखने में नहीं है। तथापि, उसके द्वारा कहे जाने पर उन्होंने इस रूप को भी पुनः दिखाया और फिर अपना द्विभुजरूप प्रकट किया। **सौम्यवपु** शब्द आशयपूर्ण है। इसका अर्थ है कि श्रीकृष्ण का द्विभुजरूप 'अतिशय मधुर' है। वास्तव में परम आकर्षक है। इसी से जब वे इस धरा-धाम पर थे, तो प्राणीमात्र उनके रूप-लावण्य पर मंत्र-मुग्ध की भाँति अनुरक्त हो गया था। श्रीकृष्ण जगत् के नियन्ता हैं, इसलिए अपने भक्त अर्जुन के भय का पूर्ण रूप से निवारण करके अपने मधुरातिमधुर रूप को उन्होंने फिर दिखाया। 'ब्रह्मसंहिता' के अनुसार जिसके नेत्र प्रेमरूपी अंजन से विच्छरित (उपलिप्त) हों, वही श्रीकृष्ण की इस रूप-माधुरी का दर्शन-आस्वादन कर सकता है।

अर्जुन उवाच।
दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः।।५१।।

अर्जुनः उवाच =अर्जुन ने कहा; **दृष्ट्वा** =देखकर; **इदम्** =इस; **मानुषम्** =नराकार; **रूपम्** =रूप को; **तव** =आपके; **सौम्यम्** =महामधुर; **जनार्दन** =हे शत्रुमर्दन श्रीकृष्ण; **इदानीम्** =अब; **अस्मि** =हूँ; **संवृत्तः सचेताः** =चित्त में स्थिर; **प्रकृतिम् गतः** =अपने स्वभाव को प्राप्त हो गया हूँ।

अनुवाद

जब अर्जुन ने श्रीकृष्ण के मूल द्विभुजरूप का दर्शन किया तो वह कहने लगा, प्रभो! आपके इस परम मधुर नराकार रूप को देखकर अब मैं शान्तचित्त हुआ अपने स्वभाव को प्राप्त हो गया हूँ।।५१।।

तात्पर्य

इस श्लोक में प्रयुक्त **मानुषं रूपम्** शब्द का स्पष्ट संकेत है कि श्रीभगवान् मूल रूप में द्विभुजधारी हैं। अतः जो श्रीकृष्ण को साधारण मनुष्य कहकर उनका उपहास करते हैं, वे निस्सन्देह उनकी दैवी प्रकृति को नहीं जानते। यदि श्रीकृष्ण साधारण मनुष्य ही हैं; तो उनके लिये विश्वरूप दिखा कर फिर चतुर्भुज रूप को प्रकट करना किस प्रकार सम्भव होता? भगवद्गीता में स्पष्ट उल्लेख है कि जो श्रीकृष्ण को सामान्य मनुष्य समझता है और श्रीकृष्ण के भीतर का निर्विशेष ब्रह्म ही बोल रहा है—इस प्रकार कहकर पाठक को पथभ्रष्ट करता है, वह व्यक्ति गीता के साथ सबसे बड़ा अन्याय करता है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को वास्तव में अपने विश्वरूप और चतुर्भुज विष्णुरूप का दर्शन कराया है। ऐसे में वे साधारण मनुष्य किस प्रकार हो सकते हैं? तत्त्व को जानने वाला शुद्धभक्त भगवद्गीता की भ्रष्ट व्याख्याओं से हतबुद्धि नहीं होता। गीता के मूल श्लोक सूर्य के समान उज्ज्वल हैं; उन्हें मूर्ख व्याख्याकारों से दीपक की आवश्यकता नहीं है।